गीताज्ञानदर्शन

प्रस्तावना

।। श्रीकृष्णाय नमः ।।

साधनापथपर चलनेवालोंके लिए मोक्षका मार्गदर्शन करनेवाली भगवान् श्रीकृष्णकी सीख !

'भगवान् श्रीकृष्ण ! नाम लेते ही मन आदरसे तथा आनंदसे भर जाता है । भगवान् श्रीकृष्णके प्रति मनमें अत्यधिक आदर क्यों होता है ? उनके अप्रतिम सौंदर्यके कारण ? रासलीलाके कारण ? बचपनसे उन्होंने किए अनेक चमत्कारोंके कारण ? सर्वज्ञताके कारण ? भगवान् विष्णुका सोलह कलाओंका पूर्णावतार होनेके कारण ? नहीं ! भगवद्गीताके द्वारा उन्होंने दिए दिव्य ज्ञानके कारण ! वस्तुतः इस ज्ञानके लिए 'दिव्य', 'अप्रतिम', 'अलौकिक', अद्भुत ये शब्द भी पूरे नहीं पडते।

१. शब्दोंमें अभिव्यक्तिको सीमा रहते हुए भी विलक्षण शब्दरचनासे भगवान् श्रीकृष्णद्वारा अनिर्वचनीय आत्मा, ईश्वर, ब्रह्म आदि अनेक विषय सुस्पष्ट तथा अच्छेसे समझाए जाना

केवल ७०० श्लोकोंकी भगवद्गीता तथा उनमेंसे ५७४ श्लोक भगवान् श्रीकृष्णके । वस्तुतः शब्दोंमें व्यक्त करनेकी क्षमता सीमित होती है । प्रतिदिनके व्यवहारकी तथा अनुभवकी बातें भी हम शब्दोंमें व्यक्त नहीं कर सकते । यथा गुडका स्वाद कैसा ? तो मीठा । सीताफल (शरीफा) मीठा, केला मीठा, कटहल मीठा । तो गुड स्वादमें सीताफल जैसा है क्या ? केलेका स्वाद कटहल जैसा है क्या ? इस प्रत्येकके स्वादकी भिन्नता हम शब्दोंमें नहीं बता सकते । यह केवल अनुभवकी बात है, अनुभवगम्य है । उसी प्रकार ईश्वर, ब्रह्म अनिर्वचनीय हैं । केवल अनुभवगम्य हैं ।

तो भी श्रीकृष्ण तो भगवान् श्रीकृष्ण ही हैं ! इतने अल्प श्लोकों में विलक्षण शब्दरचनासे उन्होंने आत्मा, ईश्वर, ब्रह्म, जन्म-मृत्यु-पुनर्जन्म

का रहस्य, देवताओंका पूजन और उसका फल, त्रिगुण तथा जीवनके प्रत्येक अंगके गुणोंके अनुसार भेद, जन्म-मरणके चक्रमें फंसनेका कारण तथा उससे छूटनेके अनेक योगमार्ग (साधना), पराभक्ति आदि अनेक विषय इतनी स्पष्टतासे बताए हैं कि एक भी संदेह नहीं रहता । कर्म करके भी उनसे पाप-पुण्य न लगने देनेकी उन्होंने बताई युक्ति तो एकमेवाद्वितीय है ।

२. गीतापर लिखी सामग्रीको ग्रंथरूपमें प्रकाशित करनेका प्रयोजन तथा निर्मितिकी यात्रा

२ अ. प्रस्तुत ग्रंथमें तत्त्वज्ञान, साधना तथा उसका फल, इस प्रकारसे प्रत्येक अध्यायमें वर्गीकरण करना : गीतापर एक उक्ति है, 'गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।' (श्रीमद्भगवद्गीतामाहात्म्य, श्लोक ४) अर्थात् 'गीताका अर्थ समझकर उसमें बताए अनुसार आचरण करना है । तब शास्त्रोंके अन्य ग्रंथोंसे हमें क्या लेना-देना ?' गीताका इतना महत्त्व है।

गीतापर महान् विद्वानोंके अनेक ग्रंथ हैं; किन्तु प्रत्येक अध्यायमें बताया गया तत्त्वज्ञान, साधना और उसका फल, इस प्रकारसे वर्गीकरण करनेवाला ग्रंथ देखनेमें नहीं आया । वह वर्गीकरण कर आवश्यकताके अनुसार विषय स्पष्ट करनेवाला विवेचन भी इस ग्रंथमें दिया गया है । कुछ विशेष विषय परिशिष्ट १ में स्पष्ट किए गए हैं ।

(अगले परिच्छेद २ आ, इ, ई प्रस्तावनामें लेनेका मेरा मानस नहीं था; क्योंकि यह मेरी व्यक्तिगत अनुभूति है, तथा ग्रंथका प्रतिपाद्य विषय 'भगवान् श्रीकृष्णकी सीख' यह है । उसमें मेरा 'मैं'पन नहीं चाहिए; किन्तु परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीका दृष्टिकोण अलग है । वे 'प्रत्येक घटनासे दूसरे क्या सीख सकते हैं', इसपर विचार करते हैं; इसलिए उन्होंने लिखनेके लिए कहा ।)

२ आ. वर्ष २००३ में अध्याय २ से ९ तक टिप्पणियां लिखना तथा गीताका ज्ञान समझना कठिन होनेके निर्णयपर पहुंचकर टिप्पणियोंका कार्य रोक देना : मैंने गीता कई बार पढी थी; किन्तु गीताके अलग-अलग अध्यायोंमें बताये गये तत्त्वज्ञान तथा साधनाकी भिन्नता कुछ स्थानोंपर स्पष्ट नहीं हो रही थी; इसलिए स्वयं ठीकसे समझ सके इस उद्देश्यसे मैं टिप्पणियां (Notes) लिखने लगा । लगभग वर्ष २००३ में अध्याय २ से ९ तक टिप्पणियां लिखीं । उस समय ग्रंथ लिखनेका कोई विचार मनमें नहीं था । तत्पश्चात् 'गीताका ज्ञान समझना मेरी बुद्धिसे परे है', इस निर्णयपर पहुंचकर मैंने टिप्पणियां लिखना छोड दिया ।

२ इ. टिप्पणियां पूरी न होनेकी टीस मनमें निरंतर लगी रहनेसे शेष अध्यायोंपर टिप्पणियां लिखने लगना तथा नवंबर २०१३ में उन्हें अंतिम स्वरूप दे पाना : तत्पश्चात् भी गीता पढता ही रहा; किन्तु टिप्पणियां पूरी न होनेकी चुभन मनमें लगातार रही । अंतमें मनकी अस्वस्थता इतनी बढ गई कि जून २०१३ से पहलेकी टिप्पणियों का पुनरीक्षण करने लगा तथा शेष अध्यायोंपर टिप्पणियां लिखने लगा । तदनंतर 'ज्ञान तो पूरा आना चाहिए; किन्तु यथासंभव न्यूनतम पृष्ठोंमें व्यक्त होना चाहिए', इस दृष्टिकोणसे पुन: जांच कर अध्यायोंकी टिप्पणियोंको नवंबर २०१३ की दीपावलीतक अंतिम स्वरूप दिया ।

२ ई. भगवान् श्रीकृष्णके वचनोंकी हुई प्रत्यक्षानुभूति ! : यह सब करते समय प्रतिदिन, सचमुच प्रत्येक दिन एक ओर 'यह सब रोक दूं, यह काम मेरी बौद्धिक क्षमताके तथा अब शारीरिक, क्षमताके भी बाहरका है', ऐसा निरंतर लगता रहा तो दूसरी ओर अनिच्छासे ही क्यों न हो, लिखनेका कार्य होता ही रहा । भगवान् श्रीकृष्णने कहा है, 'मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति' । (श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय १८, श्लोक ५९), अर्थात् 'मैं यह नहीं करूंगा', यह तुम्हारा निश्चय व्यर्थ है । तुम्हारा स्वभाव तुम्हें वह करनेके लिए बाध्य करेगा ।' भगवान् श्रीकृष्ण आगे कहते हैं, मोहके (अज्ञानके) कारण जो 'मैं यह न करूं',

ऐसी इच्छा करते हो, वह तुम्हारे स्वभावजन्य कर्मके कारण विवश होकर करोगे (अध्याय १८, श्लोक ६०) ।' भगवान् श्रीकृष्णके इस कथनकी प्रत्यक्ष अनुभूति मुझे हुई ।

३. कुछ शब्दोंके प्रयोगमें प्रस्थापित रूढि

अध्यात्मशास्त्रीय ग्रंथोंमें आत्मा, पुरुष, परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म, इन शब्दोंमें भेद न रखते हुए उनका एक-दूसरेके लिए प्रयोग किया जाता है । कहां किस अर्थसे प्रयोग किया गया है, यह अनुभवसे अथवा आद्य शंकराचार्य, ज्ञानेश्वर जैसे महात्माओंद्वारा संदर्भित श्लोकके बताए अर्थसे समझमें आता है । इसी प्रकार गीतामें दूसरे अध्यायमें 'बुद्धियोग' यह शब्द कर्मयोगके लिए, तो दसवें अध्यायके दसवें श्लोकमें 'आत्मज्ञान' इस अर्थसे आया है । 'स्वरूप'का अर्थ है स्वयंका रूप; किन्तु ग्रंथोंमें 'स्वरूप' शब्दका 'रूप' इस अर्थसे प्रयोग किया जाता है एवं स्वयंके रूपके लिए 'स्वस्वरूप' शब्दका प्रयोग करनेकी रूढि है ।

ग्रंथमें कुछ स्थानोंपर संख्याएं लिखी हैं, वे क्रमश: गीताके अध्याय एवं श्लोककी हैं ।

४. भगवान् श्रीकृष्णके उपदेशका सारांश !

४ अ. मुक्त हो जाओ, जिससे मुक्त हो जाओगे ! : कामना, ममता एवं अहंकारसे **मुक्त हो जाओ, तो** आत्मज्ञान होकर जन्म-मरणके चक्रसे **मुक्त हो जाओगे ।**

५. कृतज्ञता

५ अ. परात्पर गुरु डॉ. जयंत बाळाजी आठवले इस महान् विभूतिने 'गीतापर इस लिखितको ग्रंथरूपमें छापेंगे', ऐसा बतानेके लिए उनके प्रति कृतज्ञता ! : गीतामें बताए कर्मयोग, ध्यानयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग आदि साधनाएं करनेसे, पहले चित्तशुद्धि होती है तथा तत्पश्चात् मोक्षकी

प्राप्ति सुलभ हो जाती है । वही चित्तशुद्धि सनातन संस्थाके संस्थापक परात्पर गुरु डॉ. जयंत बाळाजी आठवले 'स्वभावदोष निर्मूलन'की प्रक्रिया द्वारा साधकोंकी करवाकर उन्हें मुक्ति सुगम करा रहे हैं । ऐसी महान् विभूतिने मैंने गीतापर जो कुछ लिखा उसे 'ग्रंथरूपमें छापेंगे' ऐसा बतानेके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूं ।

५ आ. स्वामी रामसुखदासजी महाराजका ऋणी होना ! : ब्रह्मलीन स्वामी रामसुखदासजी महाराजके छपे प्रवचनोंसे और ग्रंथसे मुझे तत्त्वज्ञान के कई विषयोंपर सुस्पष्ट दृष्टिकोण मिला । मैं उनका ऋणी हूं ।

५ इ. समर्थ रामदासस्वामी तथा भगवान् श्रीकृष्णके आगे कृतज्ञतासे नतमस्तक ! : मेरी किशोरावस्थासे ही जिनकी उंगली पकडकर मैं आत्मज्ञानप्राप्तिके मार्गपर चल पडा, वे समर्थ रामदासस्वामी; तथा किशोरावस्थासे ही जिन्होंने मेरा हाथ थामकर उसे आजतक नहीं छोडा एवं गीताका ज्ञान दिया वे भगवान् श्रीकृष्ण, इनके सामने मैं कृतज्ञतासे नतमस्तक हूं ।

।। श्रीकृष्णार्पणमस्तु ।।

– अध्ययनकर्ता (अनंत बाळाजी आठवले, २१.१२.२०१३)

जीवनमें होनेवाले पापोंका परिमार्जन करनेका मार्ग दिखानेवाला सनातनका ग्रंथ !

पापोंके दुष्परिणाम दूर करनेके लिए प्रायश्चित

- दंड मिलनेपर भी अपराधी वही पाप पुनः क्यों करता है ?
- नामजप करते हुए कर्म करनेपर पाप क्यों नहीं लगता ?
- पापोंका नाश होनेके लिए प्रायश्चित क्यों करना चाहिए ?

विषयसूची

१. अध्ययनकर्ता अनंत बाळाजी आठवलेजीका परिचय ६

२. प्रस्तावना ८

३. श्रीमद्‌भगवद्‌गीता हिंसा नहीं, अपितु मोक्षप्राप्तिके उपाय बताती है, यह बात रुसको समझाएं ! १३

४. आध्यात्मिक परिभाषामें विशेषतापूर्ण प्रस्तावना ! १७

५. 'गीताज्ञानदर्शन' – गीताका भावार्थ समझानेवाला एक अद्वितीय ग्रंथ !' २१

६. गीताकी शिक्षाका आचरण कर स्वयंमें विद्यमान ईश्वरको जागृत करें ! २३

७. सनातन संस्थाके संस्थापक परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी परिचय २४

ग्रंथकी अनुक्रमणिका

卐 प्रकरण १ : गीताअध्याय

अध्याय १ – अर्जुनविषादयोग २५

अध्याय २ – सांख्ययोग २८

अध्याय २ – बुद्धियोग ३४

अध्याय ३ – कर्मयोग ४०

अध्याय ४ – ज्ञानकर्मसंन्यासयोग ४५

अध्याय ५ – कर्मसंन्यासयोग ५२

अध्याय ६ – आत्मसंयमयोग (ध्यानयोग) ६०

अध्याय ७ – ज्ञानविज्ञानयोग ६४

अध्याय ८ – अक्षरब्रह्मयोग ६८

अध्याय ९ – राजविद्याराजगुह्ययोग ७२

अध्याय १० – विभूतियोग ७६

अध्याय ११ – विश्वरूपदर्शनयोग ७९

अध्याय १२ – भक्तियोग ८२

अध्याय १३ – क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग ८५
अध्याय १४ – गुणत्रयविभागयोग ८८
अध्याय १५ – पुरुषोत्तमयोग ९१
अध्याय १६ – दैवासुरसंपद्विभागयोग ९४
अध्याय १७ – श्रद्धात्रयविभागयोग ९६
अध्याय १८ – मोक्षसंन्यासयोग १००
卐 **उपसंहार** १०८
परिशिष्ट १ – कुछ उद्बोधक विचार १०९
१. हिन्दू २. अहंकार १०९
३. मनुष्योंके स्वभाव तथा रुचि-अरुचि अलग-अलग क्यों होते हैं ? ११०
४. गुणकर्मविभाग ५. कामना ११०
६. कर्मोंसे ज्ञान कैसे प्राप्त होता है ? ११२
७. राक्षसी, आसुरी तथा मोहिनी प्रकृति ११५
८. योगक्षेम ९. वाद ११५
१०. कार्य एवं करण ११. आत्मा, ईश्वर, परमात्मा एवं ब्रह्म ११६
१२. मुक्तिके लिए भक्ति १३. स्फुट विचार १२१
परिशिष्ट २ – गीताके बहुधा सभी अध्यायोंमें समता तथा निष्कामता, ये दो बातें समान होना १३०
परिशिष्ट ३ – श्रीमद्भगवद्गीताके प्रत्येक अध्यायकी साधनाका सार १३२
परिशिष्ट ४ – भक्तको आश्वस्त करनेवाले भगवान् श्रीकृष्णके कुछ वचन १३५
परिशिष्ट ५ – भगवद्गीतामेंके कुछ अमूल्य रत्न १३७
रत्न १ : योगोंका संक्षेपमें परिचय १३७
रत्न २ : कर्मयोग कर्म छूटनेके लिये होना १३७
रत्न ३ : सात्त्विक, राजसी और तामसी ज्ञान १३८

रत्न ४ : तपश्चर्या १४०
रत्न ५ : अपने स्वाभाविक कर्मोंसे भी ईश्वरप्राप्ति संभव १४१
रत्न ६ : विभिन्न साधना एवं साधनाओंका मर्म १४२
रत्न ७ : 'निर्गुण', 'निर्गुणत्व' ऐसा कुछ भी न होना १४३
परिशिष्ट ६ – पाठकोंकी कुछ शंकाएं और उनका निरसन १४७
प्रश्न १ : वर्ण स्वभावके अनुसार मानें अथवा जन्मके अनुसार ? १४५
प्रश्न २ : जीवको पिछले जन्मकी स्मृतियां क्यों नहीं रहती ? १४९
प्रश्न ३ : त्रिगुणोंका उपयोग करें । त्रिगुणोंको त्याज्य क्यों मानें ? १५०
प्रश्न ४ : क्या ईश्वर ही सब कुछ करता है अथवा नहीं ? १५२
प्रश्न ५ : कर्मकांड, कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग में क्या अंतर है ? १५४
परिशिष्ट ७ – ग्रंथकारके विशेष लेख १६०
लेख १ : ईश्वर स्वसंवेद्य है ! १६०
लेख २ : मनुष्यको आत्मसाक्षात्कार (स्वरूपका बोध) स्वयंमें कहां और कैसे होता है ? १६२
लेख ३ : धर्म – लेखका उद्देश्य एवं मर्यादा १६४
परिशिष्ट ८ – सनातन धर्म : कुछ भ्रामक धारणाएं और उन विषयों में वास्तव १७३
卐 प्रकरण २ : 'ज्ञानके भंडार' तथा अनेक गुणोंकी खान पू. भाऊकाका (पू. अनंत आठवले) ! १८७
卐 प्रकरण ३ : प्रस्तुत ग्रंथके विषयमें सनातनके संत तथा साधकोंके गौरवोद्गार १९१
卐 प्रकरण ४ : प्रस्तुत ग्रंथके संदर्भमें सनातनके साधकोंकी अनुभूतियां १९४
卐 प्रकरण ५ : तीर्थरूप भाऊकाकाद्वारा ६४ प्रतिशत आध्यात्मिक स्तर प्राप्त करनेपर उन्हें दिया गया शुभकामनापत्र १९५